दसुआ। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को ओमशाति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु .सुमन बहन।

नाभा। केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री परनीत कौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु .गुलशन,साथ में ब्र.कु .रेखा सुशील कुमार जैन ,पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रिकार, कुसुम जैन व जीतिया जिन्दल।

नालागढ़। पत्रिकारों के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात दिव्य हिमाचल के अरूण पाठक जी को ईश्वरीय सौगात देंते हुए ब्र.कु .गौरव, ब्र.कु . राधा साथ में पंजाब केसरी के शेर सिंह, व शलीम तथा अन्य।

नवॉशहर-पंजाब। बलदेव सिंह बल्ली,डीपीआरओ,को ओमशांति मिडिया द्वारा सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात ब्र.कु . राम भाई,पीआरओ, रवीन्द्र सिंह तथा ब्र.कु .पोखर।

अतरैला-रीवा। कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए विधायक राजकुमार उर्मलिया साथ में ब्र.कु .निर्मला।

सिरसा। जागृत करे अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को कार्यक्रम के दौरान राज सिंहजी एसएसपी, शिव प्रसाद, एडीसी,को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु .स्वामीनाथन एवं ब्र.कु बिन्दु बहन।

विचारों का शरीर पर प्रभाव

-डॉ.शतीष गुप्ता

आत्मा, मन और शरीर संरचना का विकासशील सिद्धांत

विश्व स्वास्थ्य संघ ने स्वास्थ्य की परिभाषा की है -बीमारी का न होना मात्र ही स्वास्थ्य नहीं है वरन स्वास्थ्य सम्पूर्ण शारीरिक,मानसिक,सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण की स्थिति है। इस परिभाषा को मद्देनजर रखते हुए इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि वह सम्पूर्ण रूप से स्वास्थ्य है। आइये विकित्सकों के रोज के जीवन में घटने वाली एक घटना पर विचार करें।

एक बहुत गम्भीर रूप से बीमार व्यक्ति को आपातकालीन कक्ष में लाया जाता है। सेवा पर उपस्थित चिकित्सक मरीज को बचाने का भरसक प्रयास करता है परन्तु सफल नहीं हो पाता। मरीज मर जाता है। चिकित्सक उसके मित्र-सम्बन्धियों से हाथ जोडकर माफी मांगता है और कहता है इस मुर्दे को बाहर ले जाया जा रहा है। एक व्यक्ति का मत शरीर को बाहर ले जाया जा रहा है। दूसरा व्यक्ति मत देह में कैसे बदल गया क्या हुआ क्योंकि आत्मा चली गई है।

अब मान लीजिए कि इस इस देह से,सम्बन्धियों की सहमति से,आप हदय, लीवर, किडनी आदि अंगों को निकाल कर किसी जरूरतमन्द व्यक्ति में प्रत्यारोपित कर देते हो तो वहां यह अंग काम करना शुरू कर देते हैं जबकि पहली देह में ये कार्यविहीन हो गए थें। क्यों क्योंकि आत्मा इस देह से चली गई थी ।

आत्मा एक चेतन शक्ति है, जिसे इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता केवल ज्ञान की आंखो से देखा जा सकता है। (जैसे बिजली की शक्ति इन आंखो से तार में प्रवाहित होती हुई नहीं दिखती परन्तु विभिन्न उपकरणों में कार्यरत इस शक्ति को ज्ञान के आधार से अनुभव किया जा सकता है) आत्मा शरीर की मालिक है जैसे एक ड्राईवर कार को चलता है। जब आत्मा शरीर में है तो सभी अंग, प्रत्यंग सुचारु रूप से कार्य करते हैं परन्तु जब आत्मा शरीर को परित्याग कर देती है तो सभी अंग कार्य करना बन्द कर देते हैं जैसे बिजली चली जाने के बाद सभी उपकरण जैसे-पंखा,फ्रिज,ओवन आदि कार्य करना बन्द कर देते हैं। स्थूल शरीर को नियंत्रित करने के लिए आत्मा के पास तीन सूक्ष्म शक्तियां हैं - मन, बुद्धि और संस्कार।

जैसे शीतलता जल का मूल गुण है और गर्मी और प्रकाश सूर्य के मूल गुण हैं। इसी प्रकार आत्मा के सात मूल गुण है - ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम खुशी, आनन्द और शक्ति सभी मूल गुण आध्यात्मिक शक्ति के रुप में हरेक कोशिका में प्रवाहित होते हैं और उसका पोषण करते है।हरेक कोशिका में प्रवाहित होते हैं और उसका पोषण करते है जैसे शीतलता जल का मूल गुण है परन्तु यदि जल को गर्म कर दिया जाए तो अनेकों को जला सकता है और यदि कुछ घण्टों के लिए छोड़ दिया जाये तो यह पुन: अपनी शीतलता की मूल स्थिति में आ जाती है। इसी प्रकार आत्मा भी मूल रूप शान्त स्वरूप है परन्तु यदि बाह्य या आन्तरिक कारणों से यह गर्म (क्रोधित) हो जाए तो स्वयं को और दूसरो को भी हानि पहुंचा सकती है। लेकिन कुछ समय (क्रोध) के बाद पुन: अपने मूल शान्त-स्वरूप की स्थिति में लौट आती है।

स्थूल शरीर में विभिन्न अंग समूहों का विकास और पोषण

आत्मा अठारह सप्ताह या बीस सप्ताह के बाद गर्भ में प्रवेश करती है। यह शक्ति जब अपने पूर्व शरीर को त्यागती है और नए शरीर में प्रवेश करती है तो वह अपने पिछले जीवन की मूल शक्तियों का बचा हुआ संग्रह साथ ले आती है और यही सात मूल गुण शरीर की विभिन्न प्रणालियों को विकसित करते हैं और उनका पोषण करते हैं। हमारे शरीर में आठ अंग प्रणालियां हैं। जैसे - श्वसन प्रणाली, आमाशय और आंत सम्बन्धी प्रणाली आदि-आदि । आत्मा के सात मूल गुण इन सभी अंग प्रणालियों में प्रवाहित होते हैं और उनकी पालना करते हैं परन्तु गुण से ही विकसित होती है। जैसे दिमाग ज्ञान का केन्द्र है और हृदय प्रेम का केन्द्र है । इस सम्बन्ध को हम नीचे देखेगे-

1.ज्ञान -मस्तिष्क प्रणाली
2.पवित्रता - पांच कर्मेन्द्रिया(चेहरा)
3.शान्ति -श्वसन प्रणाली ।
4.प्रेम - रक्त संचरण प्रणाली (हृदय)
5 .खुशी - आमाशय और आंत सम्बन्धी प्रणाली ।
6.आनन्द - उत्पादन प्रणाली
(क) जोड (ख) संरचना

जोड के चार स्तर -आत्मिक स्तर पर, मानसिक स्तरपर, भावात्मक स्तर पर, शारीरिक स्तर पर,

7 . शक्ति - माँसपेशी और ढांचा प्रणाली
8 . सदभावना - उत्सर्जन (मल त्याग) प्रणाली में सभी मूल गुणों की सदभवना।

नकारात्मक विचार, भावनाएं, सिध्दान्त, स्मृतियां और नकारत्मक व्यक्तित्व चिन्ह, जैसे - अकेलापन, शत्रुता, भय, क्रोध , सामाजिक व्यवहार की कमी, प्रेम की कमी , असुरक्षा की भावना आदि के कारण हृदय में प्रेम का प्रवाह कम हो जाता है जिसके कारण गम्भीर हृदय रोग उत्पन्न होते हैं। आत्मा से प्रेम का प्रवाह हृदय को जितना मिलता है। इसी प्रकारअन्य अंग प्रणालियों में भी उन-उन प्रणालियों के विकास और पालना में आवश्यक मूल गुण का प्रवाह पर्ण रूपेण न होने पर बीमारी उत्पन्न हो जाती है।

आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां

1. मन - यह आत्मा का विचार शक्ति है इसके चार अंग (घटक) हैं। 1.संकल्प,2. भावनाएं, 3 . दृष्टिकोण और 4 . स्मृतियां । यह आत्मा की मानसिक शक्ति है । यह मानसिक शक्ति प्रकाश का घेरा (सूक्ष्म शरीर) निर्माण करती है। आत्मा अपनी मानसिक शक्ति की तरंगें दिमाग के सभी केन्द्रों तक पहुंचती है। जैसे - विचार केन्द्र (हाइपोथेलामस), भावनाओं और दृष्टिकोण को केन्द्र (लिम्बिक प्रणाली), समृति केन्द्र (फरोन्टल कोरटेक्स) श्वसन केन्द्र , वाक केन्द्र , दृश्य केन्द्र आदि ये सभी केन्द्र आदि ये सभी केन्द्र आत्मा के अति नज़दीक हैं, आत्मा मानसिक शक्ति को स्थूल शरीर की एक -एक कोशिका तक प्रवाहित करती है। कई वैज्ञानिक यह मानते हैं कि मन केवल मस्तिष्क में ही नहीं वरन शरीर की प्रत्येक कोशिका में है। इसका अर्थ यही है कि मानसिक शक्ति का भी वही आकार है जो शारीरिक शक्ति का है। यह जाना माना तथ्य है कि शरीर के प्रत्येक अवयव में विधुत तरंगे हें, जिन्हें साइंस के उपकरणों से मापा जा सकता है।मस्तिष्क की कोशिका विधुत तरंगों को Electro- Encephalo (E.E.G.) से मापा जाता है। हृदय की कोशिका विधुत तरंगों को Electro Cardiogarphy (E.C.E) से मापा जाता है और मांसपेशियों की कोशिका विधुत तरंगों को Electro Myo graphy(E.M.G.) से मापा जाता है ।

किरलियन फोटोग्राफी से हम किसी भी रोग के चिन्ह बाहर प्रगट होने से पहले अन्दर ही अन्दर जान लेते हैं। एक व्यक्ति जब अधिक समय तक सोचता है तो उसके चारों तरफ का ओरा सफेद रंग से किसी भी रंग में बदल जाता है। जैसे - बैंगनी, पीला, नीला या हरा आदि । और यदि मानसिक शक्ति का प्रवाह बिल्कुल नहीं है तो यह घेरा काला भी हो सकता है। मूल गुणों की शक्ति को शरीर के विभिन्न अंगों में पहुचांने में मन शू (सम्बन्ध) का काम करता है। यदि मन नकारात्मक सोचता है तो समझों शू (सम्बन्ध) खराब है और आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां विभिन्न अंगों तक नहीं पहुंचेंगी तथा शरीर का विशेष अंग जिस तक भी यह शक्ति नहीं पहुंचेगी वह बीमारी की चपेट में आ जायेगा। कौन-सा अगं ज़्यादा पीड़ित होगा यह हमारे चारें ओर के वातावरण तथा पारिवारिक पृष्ठ भूमि से भी निर्धारित होता है , और इनका भी आधार हमारे पूर्व जन्म के अच्छे या बुरे कर्म होते हैं। बुरे कर्म आध्यात्मिक शक्ति को शोषित कर लेते हैं। और अच्छे कर्म इसमें वृद्धि करते हैं। जो अंग प्रणाली पाप कर्म के निमित्त बनती

- शेष पेज 8 पर..